

# ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान

## बिसवाँ सीतापुर



**“मूल ज्ञान ही सर है ”**

**“नीति वाणी”**

**कूर, कृतघ्न और लालची, कटुभाषी और मूर्ख !**

**धूर्त, दुष्ट और स्वार्थी, इनसे रहना दूर !!**

**कलह, आलसी, छल, कपट, इनसे लिप्त हो जोय !**

**सदा असत्य ही बोलता, अधम कहावै सोय !!**

**खुद को चतुर जो मानता, प्रेम रहित जो होय !**

**स्थिर जिसकी भक्ति नहि, अधम कहावै सोय !!**

मदिरा, माँस आहार हो, कपट और छल व्यवहार !

निम्न वृति मन में सदा, दुःख पावे संसार !!

क्रोध, लोभ मन में रहे, मद, मत्सर जो होय !

आत्मघट नहि प्रकट हो, लाख जतन करै कोय

शेखचिल्ली बनो नहि, जागृतस्वर्जन भी छोड़ !

कर्म करो तुम लक्ष्य पर, जीव आत्मा जोड़ !!

धन, संपत्ति और योजना, इनको रखना गुप्त !

दिन - दिन यह फूलें फले, कभी न होवें लुप्त !!

अहंकार ही गर्व है, करै समूल विनाश !

मद को कहत घमण्ड है, नासै सकल विकास !!

छल, कपट और पाप का, यहाँ ही मिलता फल !

सोचो, समझो, जान लो, समय की धार प्रबल !!

चलना समय के साथ में, सदा प्रकृति के संग !

दूर दृष्टि हरदम रहे, कभी काज न भंग !!

## **“चेतावनी”**

संसार में दुःख क्यों भोग रहा, जब सुख का सागर तू ही है !

निर्धनता में क्यों डूबा है, जब सब का मालिक तू ही है !

है माया में क्यों फँसा हुआ, जब मायाधीश भी तू ही है !

जीवन में अंधकार है क्यों, जब जगत प्रकाशक तू ही है !

अज्ञानी सब कहें तुझे , भण्डार ज्ञान का तू ही है !

लालच में क्यों फँसा हुआ, जब तीन लोक का मालिक है !

तीन ताप क्यों व्यापि रहें, जब रामराज्य तेरा ही है !

है दर-दर में क्यों भटक रहा, जब ईश्वर अंश भी तू ही है!

इन सब का एक ही कारण है, तू विमुख अभी ईश्वर से है !

ईश्वर से क्यों विमुख है तू, जब ईश्वर अंश भी तू ही है !

तू तीन पदों में फँसा है क्यों, जब चौथा पद ही ईश्वर है !

केवल सतगुरु को खोज ले तू, तू पूर्ण है तू ही ईश्वर है !

सुमिरन इंद्रियों से होता है, जब इंद्रियातीत वह ईश्वर है !

ध्यान तो मन से होता है, जब मनोतीत वह ईश्वर है !

भजन सुरत से होता है, जब भजनातीत वह ईश्वर है !

तू सुमिरन, ध्यान, भजन में फँसा, जब इसके आगे ईश्वर है !

## चेतावनी न. - 2

देखो मुझे देखने वालों, मैं कैसा बौराया !

प्रभु के धोखे माया पकड़ी, प्रभु को समझ न पाया !!

यहाँ आय मोरी सुधि बुधि बिसरी, भूल गया उपदेश !

प्रभु को छोड़ि है माया पकड़ी, यह माया का देश !!

ध्यान कर रहा माया का मै, ध्यानातीत वह ईश्वर है !

भजन भी करता माया का मै, भजनातीत भी ईश्वर है !!

क्रिया कर्म सब माया के है, इनसे न्यारा ईश्वर है !

गली, गली में भटक रहा हूँ, पास हमारे ईश्वर है !!

# “केवल सार को खोजो”

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय !

सार- सार को गहि रहे, थोथा देय उड़ाय !!

मुख्य जानना चार पद, छुपा इन्हीं में सार !

चौथा पद ही सार है, पद हैं तीन असार !!

तन, मन, सुरत है तीन पद, चौथा पद है आत्म !

चौथे पद को खोजना, कहे इसे अध्यात्म !!

तन, मन, सुरत हैं प्रकट पद, आत्म पद है गुप्त !

केवल आत्म खोज लो, यही है सार विलुप्त !!

तुम सब मानुष हो नहीं, मानुष तेरी देह !

घट के पर्दे यदि खुलें, सन्मुख होय विदेह !!

जीव, जगत, परमात्मा, मुख्य तीन का ज्ञान !

हृष्टि जगत से यदि हटे, दोनों एक हो जान !!

जगत बना शिव तत्त्व से, कण-कण शिव का वास !

तत्त्व नहीं परमात्मा, मिलता बिना प्रयास !!

राम है व्यापक जगत में, सबका है आधार !

यही जीव का लक्ष्य है, वेदों का है सार !!

तीन लोक हैं कौन से, श्रेष्ठ कौन है लोक !

जीव कहाँ के श्रेष्ठ है, कैसे मिले अलोक !!

मृत्युलोक सम लोक नहिं, नर समान नहिं देह !

नर से नारायण बनो, सन्मुख होय विदेह !!

मन की दृष्टि शरीर पर, आत्म पर है नाहिं !

दृष्टि जुड़े यदि आत्म से, लक्ष्य पूर्ण हवे जाय !!

## **“मूल भागवत ज्ञान”**

**पात-पात क्यों भटकता, मूल को खोजो जाय !**

**जो तू जाने मूल को, फूले, फले अघाय !!**

**श्री भागवत कथा से, मूल को तू पहिचान !**

**मूल ही केवल सत्य है, उसको ही तू जान !!**

**केवल चार श्लोक में, मुख्य भागवत सार !**

**ब्रह्मा जी ने कह दिया, मुख्य सत्य है सार !!**

ब्रह्म से नारद सुनी, नारद से सुनी व्यास !

व्यास से जग सारा सुना, सुन, सुन मूल अभास !!

सबसे पहले था वही, और था कुछ भी नाहिं

बाद में भी होगा वही, सत्य परे कुछ नाहिं !!

कारण, महाकारण नहीं, स्थूल, सूक्ष्म भी नाहिं !

कोई देही है नहीं, खोज विदेही माहि !!

एक सत्य है दो नहीं, तीन चार जो माने !

अज्ञानी भ्रम में वही, मूर्ख उसी को जाने !!

मूल सार परमात्मा, वही आत्मा जान

उसी को ईश्वर भी कहें, उसी एक कौ जान !!

## 2. “ जानना क्या है”

पहली सीढ़ी बाह्य है, यह साकार का ज्ञान !

कथा, भागवत, तीर्थ, व्रत, नियम, धर्म सब ज्ञान !!

क्रिया कर्म इंद्रिय करै, पूजा बाह्य ही होय !

देवी, देवता काल्पनिक, कर्म काण्ड यह होय !!

अध्ययन करो शरीर का, इसमें पद है तीन !

निराकार की भक्ति है, यही है सीढ़ी तीन !!

इंद्रिय मन और सुरत की, सीढ़ी चढ़ना तीन !

सुमिरन, ध्यान और भजन से, पार हो सीढ़ी तीन !!

विचार को ही सुमिरन कहे, कहे प्रकाश को ध्यान !

अनहंदनाद ही भजन है, तीनों को पहिचान !!

सुमिरन तब तक ही करो, प्रकट प्रकाश न होय !

ध्यान प्रकाश का तब तक करो, अनहंद प्रकट न होय !!

अनहंद को तब तक सुनो, जब तक प्रकट न शब्द !

शब्द प्रकट तब छोड़ सब, साथो एक ही शब्द !!

यही शब्द है आत्मा, यही है पद निर्वाण !

क्रिया कर्म सब छोड़ दो, सार यही है जान !!

## **“कैसे अध्ययन करें”**

**जीव कहाँ अध्ययन करो, सन्मुख कर दो आत्म !**

**दोनों मिलकर एक हो, इसे कहें अध्यात्म !!**

**उबला अंडा देख के, समझो जीव और कोष !**

**जीव मध्य में रह रहा, ऊपर पांचो कोष !!**

**कोषों से है निकलना, सन्मुख होवे जीव !**

**मन और सुरत सब पार हो, यही अवस्था पीव !!**

**पहले खोजो जीव को, फिर खोजो तुम आत्म !**

**दोनों को सन्मुख करो, यही मूल अद्यात्म !!**

**लोक, शरीर और कोष सब, पार करै जब जीव !**

**सन्मुख होवे आत्म के, यही अवस्था पीव !!**

## **जीव की आवश्यकता**

**वश में होवे इंद्रियाँ, मन बुद्धि वित दुरुस्त!**

**जीव हो सन्मुख आत्म के, प्राण रूप से मुक्त!!**

**ब्रह्म, ओम, मैं एक ही, यह कर्ता पद होय!**

**पूर्ण अकर्ता सतपुरुष, जीव के सन्मुख होय!!**

## मूल ज्ञान

मुख्य चार में है बटोँ, यह पूरा अद्यात्म !

मृत्युलोक, स्वर्गलोक, ब्रह्मलोक, चौथा है परमात्म !!

पात - पात क्यों भटकता, मूल खोजना होय !

केवल मूल है जानना, यही परमपद होय !!

चौथा लोक है परमपद, एक यही अद्वैत !

केवल इसे ही जानना, बाकी सभी है द्वैत !!

चौथा पद ही मुख्य है, कहते इसी को आत्म !

जगत प्रकाशक यही है, मूल यही है राम !!

सभी प्रकाशित इसी से, स्वर्ग ब्रह्म के लोक !

संचालक है ब्रह्म का, कहते इसे अलोक !!

इसी से पैदा हो रहे, हरदम तीनों देव !

आधार ब्रह्म का यही है, इसे ही खोजे जीव !!

# वेद-मार्ग

तीनों लोक में चल रहा, वेदमार्ग का पंथ !

देवी देवता शास्त्र सब, यही आस्तिक पंथ !!

जप तप अजपा इसी में, इसी में है अवतार !

जंत्र मंत्र और तत्व सब, वेदों का आधार !!

जगतगुरु, विश्वगुरु और शंकराचार्य !

वेदमार्ग से चल रहे वेद ही है आधार !!

क्रिया, कर्म, जप, तप करे, भजन करे और ध्यान !

वेदमार्ग है आस्तिक, तीन लोक का ज्ञान !!

वेदमार्ग है आस्तिक, शेष नास्तिक ज्ञान !

नेति - नेति है वेद में, ईश्वर की पहिचान !!

हमें जिसे है खोजना, वेदों ने कहा नेति !

वेदमार्ग से ना मिले, इसके आगे चेति !!

बाकी सब है वेद में, केवल ईश्वर नाहिं !

नेति- नेति जेहि कह गये, वेद है जानति नाहिं !!

# सतगुरु - पथ

यदि तुम चाहों ईश को, खोजो सद्गुरु जाय !

बिन सद्गुरु वह न मिले, भेद न कोई पाय !!

नाम रूप तो वेद मत, सतगुरु का सतनाम !

केवल सद्गुरु खोजना, स्वयं मिलेगा राम !!

कोई मार्ग है नहीं, न कोई है पंथ !

अकथ, अपढ़, अलेख है, न कोई है ग्रंथ !!

**पूर्ण अकर्ता, सतपुरुष, अमरलोक सतनाम !**

**यही मोक्षपद, परमपद, सतगुरु और अनाम !!**

**भजन, ध्यान कुछ भी नहीं, क्रिया कर्म भी नाहिं !**

**दृष्टि सहज हो जीव की, आत्मघट के माहि !!**

**मन की दृष्टि शरीर पर, इंद्रियाँ कर रही काम !**

**दृष्टि जो पलटे आत्म पर, तुरत मिले वह राम !!**

# गुरु और सद्गुरु में भेद

सद्गुरु वही कहावे, सतगुरु पद प्रकट करावे !

सन्मुख जीव करावे, मन कौवा से हंस बनावे !!

जगतगुरु और विश्वगुरु, और शंकराचार्य !

सद्गुरु सम कोई नहीं, मन से करो विचार !!

वेदमार्ग के गुरु सब सद्गुरु का नहिं मार्ग !

सन्मुख कर दे जीव को, जागे पूरण भाग्य !!

क्रिया कर्म कुछ भी नहीं, न कोई है योग !

भजन, ध्यान, जप, तप नहीं, नष्ट हो मानस रोग !!

केवल दृष्टि डालकर, सन्मुख कर दे जीव !

मन कौवा से हँस हो, जीव को बनना पीव !!

न सद्गुरु का पंथ है, न सद्गुरु का ग्रंथ !

जीव को करना कुछ नहीं, जीव हो पूर्ण संत !!

सद्गुरु पारस जानिए, लोहा सोना होय !

एक सूत अंतर रखे, कैसे सोना होय !!

# फिजिकल फिट कैसे रहे

लीवर, हृदय और फेफड़ा, लंबी स्वास से स्वस्थ !

दस गिलास पानी पियो, गुर्दा होवे स्वस्थ !!

गहरी नींद में सोइए, मस्तिष्क होवे स्वस्थ !

नये नये सेल खूब बने, फिजिकल बाड़ी स्वस्थ !!

तन जब चले तब स्वस्थ हो, मन स्थिर तब स्वस्थ !

स्थिर बुद्धि ही सुमति है, वृक्षि निरोध हो चित्त !!

# समर्पण कैसे करें! न.- 1

मंत्रहीनं, क्रियाहीनं, भक्तिहीनं, समर्पणः ।

ज्ञानहीनं, ध्यानहीनं, द्वैतहीनं, समर्पणः ।

रूपहीनं, नामहीनं, पूजाहीनं, समर्पणः ।

गतिहीनं, कर्महीनं, गुणहीनं, समर्पणः ।

## **समर्पण न.-२**

**साड़ी छोड़ा द्रोपदी, ऊपर दोनों हाथ !**

**पूर्ण समर्पित हो गयी, कोई रहा न साथ !!**

**नँगे पैरों दौड़कर, तुरत आ गये ईश !**

**भरी सभा में चकित सब, यह कैसी है प्रीति !!**

सुरेशाद्याल

ब्रह्मज्ञान योग संस्थान

मोचकला बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र- 9984257903